डॉ. श्रीमती सुरेखा बाळासाहेब शहापुरे
हिंदी विभाग अध्यक्षा
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर.

# केदारनाथ अग्रवाल की कविता : विविध आयाम

केदारनाथ अग्रवाल स्वातंत्र्योतर हिन्दी काव्यान्दोलन के तथा प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित होकर प्रगतिवादी काव्य का सृजन किया है। उनका काव्य अनुभूति की ठोस भूमि पर आधृत है। इस संदर्भ में वे लिखते भी हैं '' कविताई न मैंने पाई, न चुराई। इसे मैंने जीवन जीतकर किसान की तरह बोया और काटा है। यह मेरी अपनी है और मुझे प्राण से अधिक प्यारी है।''[1] उनके कई काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें से 'नींद के बादल', ' युग की गंगा' तथा 'लोक और आलोक' प्रमुख हैं।

'नींद के बादल' काव्य–कृति में प्रणयानुभूतियों की प्रमुखता है। जैसे

'' तेरी तो सुधि आती प्यारी वैसे ही सुधि आती
जैसे नंदनवन की मृग को रह–रह कर सुधि आती।''[2]

'युग की गंगा' में ईश्वर का उपहास उडाया गया है। इसमें ग्राम की प्रकृति तथा जीवन की यथार्थता की भी अभिव्यक्ति है। 'लोक और आलोक' में क्रांति का आव्हान है। उनकी कविताओं में मध्यवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग का कठोर जीवानानुभव अभिव्यक्त हुआ है। कवि के लिए जीये कैसे? यही मसला महत्त्वपूर्ण है। अतः वे लिखते हैं –

'' क्योंकि न चलता घर
इस महॅगाई में
कमाई पड गई खटाई में''[3]

'ह मेरी तुम' में वे गहरी पीडा के साथ कहते हैं–

''कटु यथार्थ से लडते–लडते
अब न लडा जाता है मुझसे''[4]

कवि वर्गबध्द समाज में उस वर्ग से संबंध कविता को महत्त्व देते हैं, जिस वर्ग के लोग शोषण, अपहरण और असमानता को समाप्त करने के लिए संघर्षरत हैं। 'आत्मगंध' में उन्होंने लिखा है –

'' प्रिय है मुझे सृजनधर्मिता
कविताऍ लिखना
मानवीय मूल्यों को उजागर करने वाली
प्रिय है मुझे जीवन्त रहना
संघर्षशील रहना।''[5]

कवि नये स्वस्थ समाज एवं व्यापक आत्मीयता का सपना वर्षों से देखा है। अतः वह मनुष्य के श्रम से उसके निर्माण में तल्लीन है –

'' मैं लडाई लड रहा हूँ मोर्चे पर
जिन्दगी की फौज मेरी शक्तिशाली
आज आगे बढ रही है।''
वेग से, बल से, उमड कर चढ रही है।''[6]

दीन–हीन जनता का जीवन चित्रण ही कवि की रचना का विषय बना है–

''अधिकांश जनता का रद्दी की टोकरी का जीवन है
संज्ञाहीन, अर्थहीन, बेकार, चिरे फटे, टुकडों का कपडा है।''[7]

कवि ने 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' काव्यसंग्रह की 'बसंती हवा' कविता में प्रकृति का चित्रण तो किया है पर यहॉ भी कवि को उदासी दिखाई देती है –

''आज नहीं बिल्कुल उदास भी

सोई थी अपने पानी में
उसके दर्पण पर
बादल का वस्त्र पडा था।''[8]

प्रकृति की क्रोड में रहने के बावजूद भी कवि अप्रस्तुत का सहारा नहीं लेना चाहते –

'' उसके नयन जो किशोर हैं
रुप के विभोर जो चकोर हैं
ऐसा कुछ
आज मुझे भा गये
आह! मुझे
प्यार की पुकार से
निहार गये,
और मुझे
म्लान हुए हार–सा
उतार गये।''[9]

'प्रेमतीरथ' नामक कविता में कवि ने सारा परिवेश काफी विस्तार में प्रस्तुत किया है – बचपन के खेलकूद, पाठशाला की पढाई, गॉव की रामलीला, कुऍ की जगत पर कमान–सी तनी गोरी, प्रेम की टंकार करती हुई, किशोर मन के सपने–दिन में जिन्हें कुमारी कहना और रात में प्रेमिका– फिर ब्याह, घर में आनंद उत्सव, चट्टान पर अंकित मूर्तियॉ, पति–पत्नी द्वारा देव दर्शन और उस दर्शन की प्रेरणा सब कुछ बडे सहज भाव से प्रस्तुत है।

कवि ने अपने जीवन में प्रेम के मूल्य को प्रतिष्ठापित किया है। अतः उन्होंने लिखा है–

'' प्रेम की परिपूर्णता में ही जिंदगी है
मानवी संपूर्णता में ही जिंदगी है।'' [10]

कवि ने प्रगाढ प्रेम करने को आवश्यक समझा है। इसलिए उन्होंने लिखा–

'' प्रेम ने छुआ
जानवर से आदमी हुआ
पथराया दिल
कुमुद हुआ
सूर्य की आग वरदानी हुई
भूमि की देह धाती हुई।''[11]

कवि प्रेम को जीवन मूल्य मानते हैं। प्रेम है क्या? प्रश्न के उत्तर में वे कहते हैं यह एक का किसी दूसरे से संबंध होता है। दो आत्मीय इकाइयों का एकात्म होता है। कवि ने एक और महत्त्वपूर्ण बात बनाई है, जिसके साक्ष्य हमें उनकी कविताओं में मिलते हैं। वे कवि हैं, पत्नी प्रेमी हैं। इस संसार में ही वे वर्षों–वर्षों रहना और जीना चाहते हैं। जैविक जीवन मात्र नहीं अपितु सुजनधर्मी चेतन जीवन जीना चाहते हैं। उनकी पत्नी दिवंगत हो चुकी है। फिर भी वह कवि की चेतना में जीवित है और उन्हें निरंतर दिखाई देती है। वे दोनों एक–दूसरे को जिलाए हुए हैं। पत्नी उन्हें द्वंद्व झेलने के लिए प्रेरित करती रहती है। उनकी कविताओं में पत्नी की उपस्थिति काफी है। उनमें अपनी पत्नी के प्रति बेहद एकनिष्ठता है। अपनी दिवंगत पत्नी के बारे में उन्होंने लिखा है–

''चली गई तुम
लेकिन जाते–जाते नैसर्गिक मुस्कान दे गई अपनी।
जो उबारकर मुझे जिलाये
अजर बनी है

मुझको
मेरी कवितओं को
अमर बनायें।''[12]

नागार्जुन की कविता में भी पत्नी की उपस्थिति काफी है, यह देखकर केदारनाथ ने लिखा है–

''नागार्जुन पति है
पत्नी से जीते हुए नहीं
अपराजिता से हारे हुए पति है।''[13]

केदारनाथ की बेहद पत्नीप्रियता प्रौढावस्था की उपज नहीं है, बल्कि युवावस्था की है। अपनी जीवित पत्नी पर भी उन्होंने काफी कविताएँ लिखी हैं। उनकी एक कविता है 'मैं पति हूँ, तुम पत्नी हो' इसमें उन्होंने अपने जन्मगांव का परिचय दिया है और साथ ही पत्नी को संबोधित कर लिखा है। उनकी प्रेमविषयक अन्य कविताएँ इस प्रकार हैं–

'मॉझी! न बजाओ वंशी'

''मॉझी न बजाओ वंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल–पल डोलता
मॉझी न बजाओ वंशी मेरा प्रन टूटता।''

'रेत मैं हूँ, जमुन–जल तुम!'

''रेत मैं हूँ, जमुन जल तुम।
मुझे तुमने
हृदय तल से ढँक लिया है
और अपना कर लिया है

अब मुझे क्या रात–क्या दिन
क्या प्रलय–क्या पुनर्जीवन।
मुझे तुमने
सरस रस से कर दिया है
छाव दुख दव हर लिया है
अब मुझे क्या शोक, क्या दुख
मिल रहा है सुख–महासुख?''

'प्राण में जो मेरा बहुत मेरा है'

'' प्राण में जो मेरा बहुत मेरा है
शब्दातीत, अर्थातीत मेरा है
प्रेयसी! वह तेरा बहुत तेरा है
न काल का, न दिक् का वहॉ घेरा है।''[14]

कवि सौंदर्य को कलाजयी मानते है। आज के युग में उसका संबंध अटूट है। सौंदर्य के कारण ही सुंदर समाज की कल्पना की जा सकती है। प्रकृति और जीवन से सौंदर्य उद्‌भूत है। सिलसिले से सौंदर्य का स्वरुप उजागर होता दिखायी देता है। कवि सौंदर्य को जीवन में ही पाते हैं। सौंदर्य जीवन का स्पृहणीय रुप तथा संवेदना अभिव्यक्त करता है। जीवन की संवेदना में जिस प्रकार संघर्ष है उसी प्रकार माधुर्य भी। जीवन की संवेदना में उत्साह–चैतन्य के साथ–साथ प्रेम भी निहित होता है। कवि मनुष्य के संघर्षशील रुप के साथ उसके मधुर रुप भी चित्रण करते हैं। इससे उनके सौंदर्य दृष्टि की व्यापकता का बोध होता है–

'' मैंने जमकर काम किया फिर
मनोयोग से दिन भर
तुमने मुझसे सदा कहा है

प्रेम नहीं निष्क्रियता है

प्रेम सघन सक्रियता है।''[15]

समग्र रुप में कहा जा सकता है कि कवि की कविताओं में विचारात्मकता और प्रचार की प्रवृत्ति साफ झलकती है। उसे अपनी धरती की सीधी गंध अभिभूत करती है। उनकी कविताएँ यथार्थ को प्रतिबिंबित करती है। उनकी कविताएँ सामाजिक संदर्भों को अभिव्यक्त करती हैं। उनमें यथार्थवादी सौंदर्यचेतना के प्रति अत्याधिक सतर्कता और जागरुकता है। वे भाषा और छंदो की कठोरता से मुक्त हैं। उन्होंने मुक्त छंद को ऊर्जा प्रदान की है और अपने लिए नए रास्ते तलाश किए हैं। उनकी भाषा में एक नयापन, सादगी और सुखद ताजगी है।

**संदर्भ :**


1. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा – आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियॉ पृष्ठ 91
2. वही – पृष्ठ 91
3. गायत्री माहेश्वरी – समकालीन कविता में स्त्री – पृष्ठ 25
4. वही – पृष्ठ 25
5. डॉ. केदारनाथ अग्रवाल – आत्मगन्ध – पृष्ठ 111
6. रमाकान्त शर्मा – समाजोन्मुख यथार्थवादी काव्य – पृष्ठ 75
7. नीरज ठाकुर – आधुनिक हिन्दी कविता विकास के आयाम–पृष्ठ 54
8. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा– आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियॉ–पृष्ठ 85
9. डॉ. सुषमा भटनागर–नयी कविता में प्रेमसंबंध – पृष्ठ 167
10. डॉ. केदारनाथ अग्रवाल – आत्मगंध –पृष्ठ 130
11. गायत्री माहेश्वरी – समकालीन कविता में स्त्री – पृष्ठ 81
12. डॉ. केदारनाथ अग्रवाल – आत्मगंध पृष्ठ – 58
13. वही – पृष्ठ 130
14. नया ज्ञानोदय पत्रिका (प्रेम महाविशेषांक – 1) पृष्ठ 116
15. डॉ. केदारनाथ अग्रवाल – आत्मगंध पृष्ठ – 54


**संदर्भ ग्रंथ :**


1. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा – आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियॉ, बोहरा प्रकाशन, जयपुर 1989
2. गायत्री माहेश्वरी – समकालीन कविता में स्त्री, संजय बुक सेंटर K-38/6 गोलघर, वाराणसी 1998
3. रमाकान्त शर्मा – समाजोन्मुख यथार्थवादी काव्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1984

4. नीरज ठाकुर – आधुनिक हिन्दी कविता विकास के आयाम, चित्ता प्रकाशन, राजस्थान 1986
5. डॉ. सुषमा भटनागर – नयी कविता में प्रेमसंबंध–प्रेमप्रकाशन मंदिर– दिल्ली 1989
6. डॉ. अवधनारायण त्रिपाठी – नयी कविता में वैयक्तिक चेतना– जवाहर पुस्तकालय, मथुरा 1979
7. अरुण कमल – कविता और समय – वाणी प्रकाशन–नयी दिल्ली–2002
8. डॉ. विजय द्विवेदी – नयी कविता प्रेरणा एवं प्रयोजन–प्रगति प्रकाशन–आगरा 1978
9. कृष्णलाल – तार सप्तक के कवि – काव्यशिल्प के मान –साहित्य प्रकाशन– दिल्ली 1979